सा विद्या या विमुक्तये ।

विद्याभारती

अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

भारतीय चिंतन आधारित

बालिका शिक्षा

बालिका की मूलभूत मनौवैज्ञानिक विशेषताओं तथा विकास की अवस्था के अनुरूप

बालिका शिक्षा क्यों ?

हमें यह सत्य स्वीकार करना होगा कि पुरुष और स्त्री के व्यवहार-क्षेत्र तथा कार्यक्षेत्र में चाहे जितनी समानता आ जाय किन्तु पुरुष और स्त्री की शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं और उनकी पूर्ति के साधनों में अवश्य ही अन्तर रहेगा । यह अन्तर कुछ तो उनकी नैसर्गिक प्रकृति की भिन्नता के कारण और कुछ उसकी शारीरिक शक्ति और कार्य-भिन्नता के कारण आवश्यक है । सामाजिक समानता का अर्थ यह नहीं है कि पुरुष और स्त्री दोनों की प्रकृति एक हो जाय । यह सम्भव नहीं है।

इसलिये स्त्रीयों की मूलभूत मनोवैज्ञानिक और भावात्मक विशेषताओं, उनकी सौन्दर्यात्मक वृत्ति, मातृत्त्वभावना, गृहिणी के रूप में उनके उत्तरदायित्व आदि का ध्यान रखते हुए उनकी शक्तियों के विकास के अनुकूल पाठ्यक्रम की व्यवस्था की जाय । साथ ही उच्च शिक्षा एवं ज्ञान के सभी क्षेत्रों में उन्हें प्रगति करने की पूर्ण सुविधा प्रदान करनी होगी।

– माननीय लज्जाराम तोमर

बालिका शिक्षा उद्देश्य

- बालिका के व्यक्तित्व का पंचकोशात्मक, समग्र विकास एवं परमेष्ठीगत विकास करना।
- बालिका को श्रेष्ठ माँ, श्रेष्ठ गुरु, श्रेष्ठ नागरिक बनाना।
- बालिका की मूलभूत मनोवैज्ञानिक और भावात्मक विशेषताओं का विकास करना।
- मातृत्वभावना, सौन्दर्यात्मक वृत्ति, गृहिणी के रूप में उत्तरदायित्व का बोधकरवाना।

- हिन्दुत्वनिष्ठ एवं राष्ट्रभक्त बालिका (स्त्री) का निर्माण करना।
- भारतीय गृहशास्त्र का ज्ञान प्राप्त करवाना।
- बालिका का स्वयं के तथा समाज के प्रति देखने की दृष्टिकोण विकसित करना।
- उनमें वर्तमान चुनौतियों का सामना करने की दक्षता का निर्माण करना

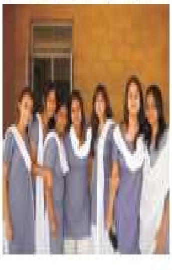

बालिका विकास की अवस्थाएं

शिशु अवस्था

जन्म से ५ वर्ष की आयु तक सीखने का करण - चित्त

किशोर अवस्था

१२ से १६ वर्ष तक सीखने का करण

मन का विचार पक्ष बुद्धि का निरीक्षण, विश्लेषण आदि...

तरुण अवस्था

१६ से १९ वर्ष की आयु तक सीखने का करण

बुद्धि के अन्य पक्ष

बाल अवस्था

५ से ८ वर्ष तक

पूर्व बाल्यावस्था

- सीखने का करण - कर्मेन्द्रियां व ज्ञानेन्द्रियां

उत्तर बाल्यावस्था

- ८ से १२ वर्ष तक

सीखने का करण

- ज्ञानेन्द्रियां व कर्मेन्द्रियां;

मन का भावनात्मक पक्ष / भावना पक्ष

युवावस्था

२० वर्ष की आयु से...

सभी करण

पूर्णतया सक्रिय

बालिका की विशेषताएं

-मातृत्वभावना, गृहिणीत्व

-विशेष जीवनी शक्ति

-त्याग, समर्पण, सहनशीलता, धैर्य

-क्षमा, कोमलता, संवेदनशीलता

-सौन्दर्यात्मक वृत्ति, धार्मिक वृत्ति

-प्रत्येक सूक्ष्म अनुभव ग्रहण करने की शक्ति

-विशेष परिस्थिति में सामंजस्य की क्षमता

-त्वरित विश्वास, त्वरित अविश्वास

-असुरक्षा का सहज बोध

बालिका शिक्षा स्वरूप

- विद्यालयों की सज्जा, व्यवस्था एवं वातावरण सहपाठ्य क्रियाकलापों के द्वारा...
- कार्यशाला, संगोष्ठी, संमेलन, प्रदर्शनी, छात्रा व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रम एवं क्रियाकलापों के द्वारा...
- बालिका के ८ साल से लेकर १६ साल तक चिंतन एवं क्रियान्वयन का व्यावहारिक प्रयोग एवं अनुभूति

- भारतीय जीवनदर्शन एवं संस्कृति, भारतीय मनोविज्ञान के परिपेक्ष्य में...
- व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व, सृष्टि, परमेष्ठि के विकास के संदर्भ में...
- परिवार शिक्षा एवं समाज प्रबोधन के माध्यम से...

बालिका शिक्षा कार्यक्षेत्र

- परिवार, विद्यालय, समाज, राष्ट्र।
- बालिका की बाल्यावस्था, किशोरावस्था, तरुणावस्था, युवावस्था के स्तर पर स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करना।

- युवती प्रबोधन, दंपती प्रबोधन, सगर्भा माताओं को मार्गदर्शन।
- चयनित माताओं की विभिन्न संगठनात्मक योजनायें चलाना। उदा. मातृभारती।

- कन्याभारती, किशोरी परामर्श केन्द्र, महिला प्रशिक्षण केन्द्र चलाना।

- अधिजननशास्त्र, संस्कारशास्त्र, आहारशास्त्र, पाकशास्त्र, गृहशास्त्र, आरोग्यशास्त्र, समाजशास्त्र के अध्ययन एवं क्रियान्वयन को व्यावहारिक रूप देना।

बालिका शिक्षा पाठ्य विषय

भारतीय जीवनदर्शन एवं संस्कृति

भारतीय मनोविज्ञान: संदर्भ बालिका शिक्षा

शरीरविज्ञान एवं आरोग्यशास्त्र

आहार , विहार एवं पाकशास्त्र

सामाजिक विज्ञान एवं समाजशास्त्र

परिवार जीवन एवं परिवार शिक्षा

ललितकला एवं व्यावसायिक शिक्षा

शासन आधारित पाठ्य विषयों की शिक्षा

बालिका शिक्षा विकास के माध्यम

गीत, कहानी, बोधकथायें,
घटना वर्णन, प्रेरक प्रसंग, वार्तालाप,
भाषण, पठन/पाठन, सत्संग,
स्वाध्याय, रंगमंच,
नाटक, कन्यासभा

घरेलू कार्य, गृहसज्जा,
गृहव्यवस्था,
कार्यानुभव, खेल, योग,
साहसिक क्रियायें, प्रयोग

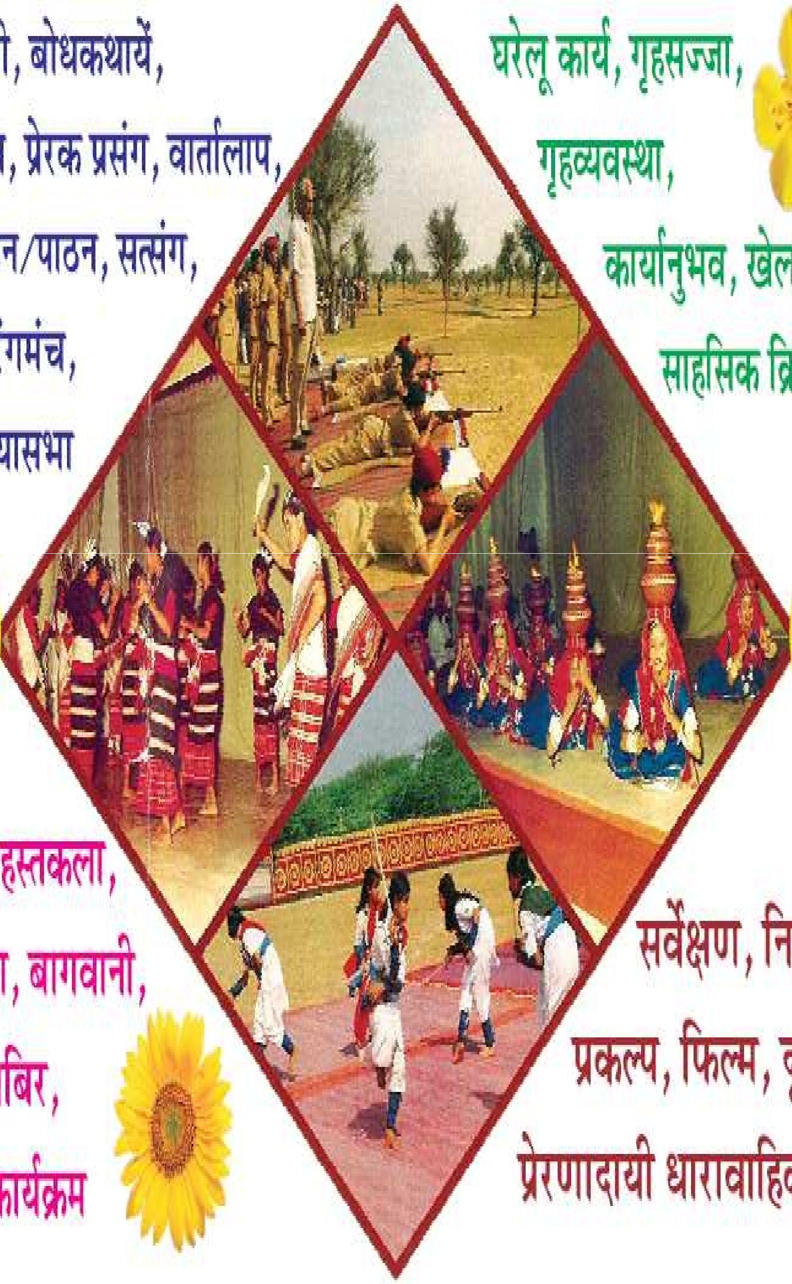

उद्योग एवं हस्तकला,
ललितकला, बागवानी,
पर्यटन, शिबिर,
साहसिक कार्यक्रम

सर्वेक्षण, निरीक्षण,
प्रकल्प, फिल्म, दूरदर्शन पर
प्रेरणादायी धारावाहिक

बालिका शिक्षा कार्यक्रम / योजना

- तरुणी महोत्सव
- सरस्वती यात्रा
- सांस्कृतिक पर्वोत्सव
- व्यावसायिक मेला
- रंगमंचीय कार्यक्रम
- प्रतिभा सम्मान समारोह
- विभिन्न प्रतियोगितायें

-मातृसंमेलन, मातृ अभ्यासवर्ग, मातृगोष्ठि

- कन्या शिबिर, महिला शिबिर
- विभिन्न विषयों के प्रबोधन वर्ग,
- विशेष व्यक्तित्व से वार्ता,
- विशेष प्रकल्प चलाना।

बालिका शिक्षा संगठनात्मक योजनायें

कन्याभारती

- बालिका में कर्तृत्व, मातृत्व, नेतृत्व के गुणों का विकास
- विभिन्न दायित्व का बोधएवं निर्णय की क्षमता का विकास
- कन्याभारती के पदाधिकारी के विकास हेतु प्रशिक्षण
- विद्यालय की गतिविधियों में सहभाग एवं अवसर देना ।
- कार्य प्रबंधन एवं सामूहिक रूप से कार्य का वितरण करके कार्य का प्रायोगिक करना ।

मातृभारती

- चयनित अभिभावक माताओं का एक संगठन
- योग्यता एवं रूचि के अनुसार दायित्व देना ।
- करणीय कार्यों को व्यवस्थित रूप में नियोजित करना ।
- माताओं का मंच जो विद्यालय एवं समाज के विकास की दिशा में सहभागी बने ।
- बैठक, अभ्यासवर्ग के माध्यम से मातृभारती के सदस्यों का विकास

बालिका शिक्षा जागरण के माध्यम

- संपर्क, बैठक, अभ्यासवर्ग, प्रशिक्षण वर्ग ।
- कार्यशाला, कार्यगोष्ठी, चिंतनगोष्ठी, विद्वत्गोष्ठी
- संमेलन, परिसंवाद ।
- विभिन्न विषयों पर प्रदर्शनी ।
- नुक्कड नाटक, शोभायात्रा ।
- मार्गदर्शन केन्द्र, परामर्श केन्द्र, प्रबोधन केन्द्र ।
- दृश्य-श्रव्य, प्रचार-प्रसार, कार्यक्रम
- साहित्य वितरण ।
- व्यावसायिक मेला (बालिका, महिला के लिये) ।

- भारतीय परिवारों की श्रेष्ठ माताओं, गृहिणीयों की संपर्क योजना

बालिका शिक्षा विद्यालय में व्यवस्थाएं

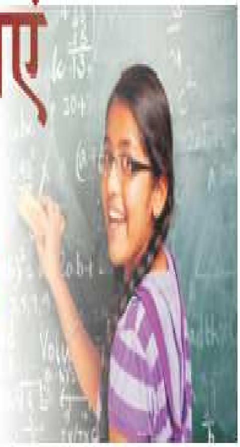

- बालिका शिक्षा कक्ष
- बालिका शिक्षा से संबधित पुस्तकें
- पाककला की प्रयोगशाला
- घरेलू उपचार के लिये सामग्री का संग्रह
- सिलाई, कढाई, बुनाई, रंगाई हेतु आवश्यक सामग्री
- औषधीय बगीचा
- महिला सम्बन्धित समाचारपत्र, महिला शोधपरक समाचार एवं शिक्षाविदों के विचारों का संग्रह

- बालिका शिक्षा की संकल्पना को स्पष्ट करने वाले सचित्र चार्ट, मोडॅल, सी.डी.।
- विविधविषयों सम्बन्धित पंजिका बनाना।
- दृश्य-श्रव्य उपकरण, सी.डी. का संग्रह।

बालिका शिक्षा समयसारणी में नियोजन

- शारीरिक शिक्षा के साथ शरीरविज्ञान एवं आरोग्यशास्त्र ।
- योगशिक्षा के साथ भारतीय मनोविज्ञान के विषय का समन्वय ।
- मूल्य शिक्षण एवं नैतिक आध्यात्मिक शिक्षा के साथ जीवनदर्शन एवं संस्कृति का समायोजन ।
- सामाजिक विज्ञान के साथ समाजशास्त्र का समायोजन ।
- गृहविज्ञान के साथ आहार-विहार पाकशास्त्र ।
- गृहविज्ञान के साथ परिवार जीवन एवं परिवार शिक्षा का समायोजन करना ।
- उद्योग, कार्यानुभव के साथ ललितकला एवं व्यावसायिक शिक्षा का समायोजन ।
- सहशिक्षा विद्यालयों में प्रधानाचार्यजी की वार्षिक योजना में समायोजन करना ।

बालिका शिक्षा विद्यालयीन रचना

• विशिष्ठ पाठ्य विषयों को सीखने की योजना • विकास के अनुरूप अध्ययन, अध्यापन पद्धति अपनाना।• बाल्यावस्था में क्रिया और अनुभव के माध्यम से, • किशोर अवस्था में मनन के माध्यम से, • तरुण और युवा अवस्था में विवेक और निदिध्यासन के माध्यम से शिक्षा। • उपकारक भवन रचना, साधन-सामग्री, स्थान, उपकरण आदि की व्यवस्था • उसी के अनुरूप समय नियोजन करना • विद्यालय की सभी गतिविधियों में विकास की इसी संकल्पना को साकार करना। • विद्यालय में बालिका शिक्षा प्रभारी नियुक्त करना।

अब हमें विचार करना है कि बालिकाओं को कौन से संस्कार, कैसी शिक्षा देनी है ? पुरुष और नारी मे जो अन्तर है उस को ध्यान में रखते हुए नारी के जागरण के लिये एक संस्कार पद्धति, उसकी दिशा हमे विशेष रूप से विचार करके तय करनी होगी । बालक, बालिका को एक आयु के बाद समान संस्कार देने से काम नही चलेगा । एक सघन गहन चिंतन करना चाहिए ।

बालिका शिक्षा में विद्याभारती को विशेष रूप से किन संस्कारों का विचार करना है, उनकी दिशा क्या होगी, पद्धति क्या होगी, कौन-कौन से विशेष गुण चाहिए, जिससे बालिका भारतीय नारी के रूप में विकसित होकर समाज को हिलाकर रख दे । हम लोग तो नारी को शक्ति मानते हैं । शक्ति रूप मे उपासना भी करते है, चाहे वह मां सरस्वती हो, मां लक्ष्मी हो या मां दुर्गा । ये शक्तियां पुरुष, समाज और राष्ट्र को प्रेरणा देती है । इसलिये राष्ट्रनिर्माण की दृष्टि से बालिका शिक्षा का अतीव महत्व है ।

– माननीय लज्जाराम तोमर